Date:

UG study material for students of History

Subject : History

class : U.G Semester IV

Paper : MJC-06

Topic : Napoleonic Impact on European Nations (यूरोपीय देशों पर नेपोलियन का प्रभाव) : III

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara

Scanned by CamScanner

यूरोपीय देशों पर नेपोलियन का प्रभाव : III
(Napoleonic Impact on European Nations : III

इटली पर नेपोलियन का प्रभाव :-

क्रांति के पूर्व इटली एक 'भौगोलिक अभिव्यक्ति' मात्र ही था। जिस क्षेत्र में इतालवी भाषा-भाषी लोग बसते थे, वहाँ पूर्ण राजनीतिक अव्यवस्था फैली हुई थी। रोमन साम्राज्य के पतनोपरांत इटली एकदम गौरवविहीन हो चुका था। फ्रांसीसी क्रांति के अवसर पर यह कई नाम-मात्र के स्वतंत्र राज्यों जैसे वेनिस और जेनोआ के गणराज्य, मिलान, मोडेना और तस्कनी की डचियाँ, पोप के धर्मराज्य, नेपुल्स के राजतंत्र में बँटा हुआ था। पर, वास्तविकता यह थी कि लगभग पूरा देश आस्ट्रियाई राजघराने के अधीनस्थ था। इस घराने ने मिलान को अपनी सीमाओं का भाग बना रखा था और शेष सम्पूर्ण इतालवी प्रायद्वीप पर इस घराने का महत्वपूर्ण प्रभाव था।

नेपोलियन इटली में दो बार अपने सैनिक अभियान पर गया। प्रथम बार वह डॉयरेक्टरी की शासनावधि में 1796 ई० में गया, जबकि उस पर इतालवी प्रायद्वीप से आस्ट्रियाई प्रभाव समाप्त करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। नेपोलियन ने इटली में कई बार आस्ट्रिया को

Scanned by CamScanner

पराजित करके प्रायद्वीप को आस्ट्रिया के प्रभाव से मुक्त किया। पर, इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि ट्रान्सपेडेन गणराज्य की स्थापना थी। इसने इटली के राष्ट्रवादियों का समर्थन प्राप्त करके रिगाओ, फेरारा, बोलोना तथा मोडेना को एक साथ मिलाकर इस गणराज्य की स्थापना की। इटली के एकीकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। बाद में, 1797 ई० में आस्ट्रिया के साथ नेपोलियन ने 'कैम्पोफोर्मियो की संधि' की। इस संधि के द्वारा आस्ट्रिया ने नेपोलियन द्वारा निर्मित सिसेल्पाइन गणराज्य को मान्यता प्रदान की। इस गणराज्य को भी नेपोलियन ने छोटे-छोटे इतालवी राज्यों को मिलाकर सम्मिलित किया था।

1805 ई० में फ्रांस के विरुद्ध यूरोपीय राज्यों का तीसरा गुट बना जिसमें आस्ट्रिया भी शामिल था। इस पर आस्ट्रिया और फ्रांस में युद्ध आरंभ हो गया और युद्ध में आस्ट्रिया पराजित हुआ। दोनों के बीच 'प्रेसबर्ग की संधि' हुई। इस संधि से इतालवी प्रायद्वीप से आस्ट्रिया का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त हो गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया से वेनेशिया लेकर इसे इटली के राज्य में मिला लिया। इस राज्य में रोम के उत्तर में इटली का काफी हिस्सा

Scanned by CamScanner

पड़ता था, जिसमें भूतपूर्व सिसलपाइन और इतालवी गणराज्य शामिल थे। लगभग उसी समय नेपोलियन ने अपने साम्राज्य में नेपुल्स का राज्य भी मिला लिया। मार्च, 1806 ई० में नेपोलियन के छोटे भाई जोसेफ को नेपुल्स और सिसली का राजा घोषित किया गया।

इटली में नेपोलियन का शासन अधिक लम्बा और लगातार रहा, जो 1796 ई० से लेकर 1814 ई० तक जारी रहा। इस अवधि में नेपोलियन ने क्रांति की भावना के अनुरूप वहाँ अनेक कार्य किये और इतालवी लोगों में राष्ट्रवाद की भावना का संचार किया। इससे इटली में राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकीकरण की भावना का विकास हुआ। इटली के छोटे-छोटे राजवंशों के समाप्त हो जाने से निश्चय ही इटली के राजनीतिक एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

जर्मनी पर नेपोलियन का प्रभाव :-

जिस क्षेत्र में जर्मन भाषा-भाषी लोग निवास करते थे, उसे जर्मनी नहीं; अपितु पवित्र रोमन साम्राज्य के नाम से जाना जाता था जिसका आविर्भाव 911 ई० में हुआ था। इस साम्राज्य में असंख्य राज्य थे जिनमें आस्ट्रिया

Scanned by CamScanner

और प्रशा प्रमुख थे। ये सब के सब संप्रभुता-संपन्न थे। इनका सम्राट तो आस्ट्रिया का राजा होता था, लेकिन उसे नाममात्र के भी सत्ता अधिकार नहीं थे। पवित्र रोमन साम्राज्य के ये सभी राज्य एक-दूसरे से स्वतंत्र थे और वे जैसे चाहें, अपनी नीति का निर्धारण कर सकते थे।

नेपोलियन ने यूरोपीय राज्यों के तृतीय गुट के खिलाफ जब 1805 ई० में सैनिक अभियान चलाया, तब उसने सर्वप्रथम आस्ट्रिया को हराकर उस पर 'प्रेसबर्ग की संधि' आरोपित की। प्रेसबर्ग की संधि से इटली का पुनर्गठन तो हुआ ही, इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव जर्मनी की राजनीति पर पड़ा। सर्वप्रथम, पवित्र रोमन साम्राज्य अन्तिम और औपचारिक रूप से तथा हमेशा के लिये समाप्त कर दिया गया। इसकी जगह पर नेपोलियन ने अपने अधीनस्थ जर्मन राज्यों को एक नये प्रकार के संघ - राइन संघ - के अन्तर्गत एकत्र कर दिया। यह जर्मनी के पन्द्रह राज्यों का एक संघ था। नेपोलियन स्वयं इस संघ का संरक्षक बना। संरक्षक के रूप में नेपोलियन ने बाद में संघ का ऐसा विस्तार किया कि व्यावहारिक रूप से आस्ट्रिया और प्रशा को

छोड़कर जर्मनी के एकीकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। इन कार्यों को सम्पन्न करके नेपोलियन ने अनजाने में ही जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया को प्रारंभ कर दिया।

नेपोलियन को पोलैण्ड के निवासियों में राष्ट्रवादी भावनाओं को जाग्रत करने का श्रेय दिया जाता है। फ्रांस में क्रांति शुरू होने के पहले पोलैण्ड का स्वतंत्र राज्य लुप्त हो गया था। रूस, आस्ट्रिया और प्रशा के बीच पोलैण्ड के पूरे भू-भाग का बंटवारा हो गया था। 1808 ई० में नेपोलियन ने प्रशा को पराजित करके उसके पोलिश प्रान्त को छीन लिया। इन भू-भागों को मिलाकर उसने वारसा की ग्रैण्ड डची बनायी।

इस प्रकार, यूरोप में नेपोलियन की उपलब्धियाँ किसी भी दृष्टिकोण से क्षणिक नहीं थीं। वस्तुतः, वह आधुनिक यूरोप का निर्माता था। उसका पतन तो अवश्य हुआ, परन्तु जिन शक्तियों के बल पर उसका उत्कर्ष हुआ था, वे उसके पतन के बाद भी नष्ट नहीं हुईं। क्रांति अपना काम कर चुकी थी और यूरोप में पुरानी व्यवस्था फिर से वापस नहीं आ सकती थी। अब नेपोलियन का काम समाप्त हो चुका था और जनता का काम शुरू होने वाला था। नये यूरोप का निर्माण होना था और इस निर्माण-कार्य में नेपोलियन का प्रभाव सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व था।

Scanned by CamScanner